आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-31, अंक-12 दिसम्बर, 2017

विश्व एड्स दिवस (1 दिसम्बर,) के अवसर पर विशेष

,p vkbZ oh ij fu;a=.k&,d lk>k ç;kl

Mk fot; uek

भारतीय दर्शन के अनुसार जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका अन्त निश्चित ही होता है। अन्तर केवल इतना होता है कि कुछ चीजें लम्बी अवधि तक रहती हैं जबकि अन्य की आयु निर्धारित होती है। एच आई वी का भी अन्त होना है, परन्तु अभी यह नहीं कहा जा सकता कि 'कब' ? हाल की रिपोर्ट्स से इसमें अब समाप्ति की दिशा में बदलाव के संकेत मिलते हैं इसलिए हम लोगों के लिए एच आई वी का तात्पर्य एक भीषण तबाही है जो डरावा के रूप में आया, अपने को एक जोखिम के रूप में स्थापित किया और एक बुराई के रूप में चुनौती प्रस्तुत किया। परन्तु प्रत्येक बुराई का अन्त होना निश्चित है और वह दिन शीघ्र आए, उस दिशा में प्रयास जारी हैं।

vk'kk,

एच आई वी संक्रमित प्रथम व्यक्ति की पहचान होने के तीन से अधिक दशकों के पश्चात हाल के दिनों में एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। फिर भी, वर्ष 2016 में 18 लाख लोगों का एच आई वी संक्रमित होना यह इंगित करता है कि इसके संचरण को रोकने के लिए नवीन और बेहतर तरीकों को अपनाने की तत्काल आवश्यकता है। इस चुनौती का सामना करने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी एजेंसियों की सक्रिय भागीदारी में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न मंच कार्यरत हैं। एच आई वी ग्रस्त रोगियों की देख–भाल करने और उनके चिकित्सा–प्रबंध के लिए भारी मात्रा में आर्थिक व्यवस्था की गई। इस समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त शोध प्रयास भी किए गए। वर्ष 2015 में वैश्विक नेतृत्व में सतत विकास लक्ष्य *(सस्टेनएबल डेवलपमेंट गोल्स)* निर्धारित किए गए। जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक व्यापक स्वास्थ्य कवरेज *(यूनिवर्शल हेल्थ कवरेज)* निर्धारित किया गया। अब व्यापक स्वास्थ्य कवरेज के ढांचे को सभी स्वास्थ्य कार्यक्रमों में सम्मिलित कर लिया गया है। अब सम्पूर्ण विश्व एच आई वी के विरुद्ध युद्ध स्तर पर जुट गया है और सभी प्रकार की सहायता प्राप्त हो रही है। वर्ष 2017 के लिए विश्व एड्स दिवस अभियान के लिए निर्धारित विषय ''स्वास्थ्य के प्रति अधिकार'' के अनुरूप विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एच आई वी संक्रमित सभी 36.7 मिलियन लोगों और इस महामारी से प्रभावित एवं इसके प्रति अतिसंवेदनशील व्यक्तियों की आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण बताया है। ''प्रत्येक व्यक्ति मायने रखता है'' नारे के अन्तर्गत विश्व स्वास्थ्य संगठन जरूरतमंद सभी व्यक्तियों के लिए सुरक्षित, प्रभावी, उच्च कोटि की किफायती दवाइयों के साथ–साथ नैदानिक सुविधाएं तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाएं उपलब्ध कराने का समर्थन करता है, इसके साथ–साथ यह भी सुनिश्चित करता है कि ऐसे सभी लोगों हेतु आर्थिक जोखिमों से सुरक्षा का प्रबंध हो।

इस अंक में

,p vkbZ oh ij fu;a=.k&,d lk>k ç;kl 121

vkbZ lh ,e vkj&jk"Vªh; ,Ml vuqla/kku laLFkku] iq.ks esa fo'o ,Ml fnol dk vk;kstu 124

dkydkrk esa vk;ksftr **jk"Vªh; izn'kZuh** esa vkbZ lh ,e vkj dh Hkkxhnkjh 125

Hkkjrh; vk;qfoZKku vuqla/kku ifj"kn ds lekpkj 127

vkbZ lh ,e vkj&jk"Vªh; fo"kk.kqfoKku laLFkku] iq.ks esa fofo/k dk;ZØeksa dk vk;kstu 127

jk"Vªh; ,oa varjk"Vªh; oSKkfud xfrfof/k;ksa esa Hkkjrh; vk;qfoZKku vuqla/kku ifj"kn ds oSKkfudksa dh Hkkxhnkjh 128

Hkkjrh; vk;qfoZKku vuqla/kku ifj"kn dh foÙkh; lgk;rk esa lEiUu ,oa Hkkoh laxks"Bh;k@lfeukj@dk;Z'kkyk,a@ikB;Øe@lEesyu 129

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **डॉ के. विजयराघवन**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ संजय एम. मेहेन्दले**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**